जय राम जय राम

सत्य साहित्य

जन्म शताब्दी विशेषांक

जय जय राम

Celebrating Birth Centenary

• 2 October 2020 •

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 4 / अंक 1, अक्टूबर 2020 • Year 4/ No. 1, October 2020

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

मैया मोहे मंगल दर्शन दीजे,
विमल तेजोमयी मधुर मूर्ति,
मनोगगन में निहारूं।
ममता-मन्दिर में मां मेरी,
अपना मुझे कर लीजे ॥१॥
मनके भाव भीतर तब जागें,
भक्ति भाव भर आवे।
भारी भरोसा भगवति पाऊं,
ऐसी करुणा कीजै ॥२॥
तेरा प्रेम बसे अंग अंग में,
तेरा राग अलापूं।
वे मैं कर्म करूं जिनसे तू,
मुझ पर मैया रीझै ॥३॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की भजन डायरी से)

यह भजन परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज को बहुत प्रिय था। वे प्रायः अपनी प्रर्थना में परमेश्वर को माँ कहकर सम्बोधित करते थे।

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के विषय में
- एक समर्पित जीवन की कुछ झलकियाँ
- अमान : परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज
- आदर्श शिष्य
- पत्रों के अंश
- यादें
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹5

जन्म शताब्दी की लख-लख बधाई!

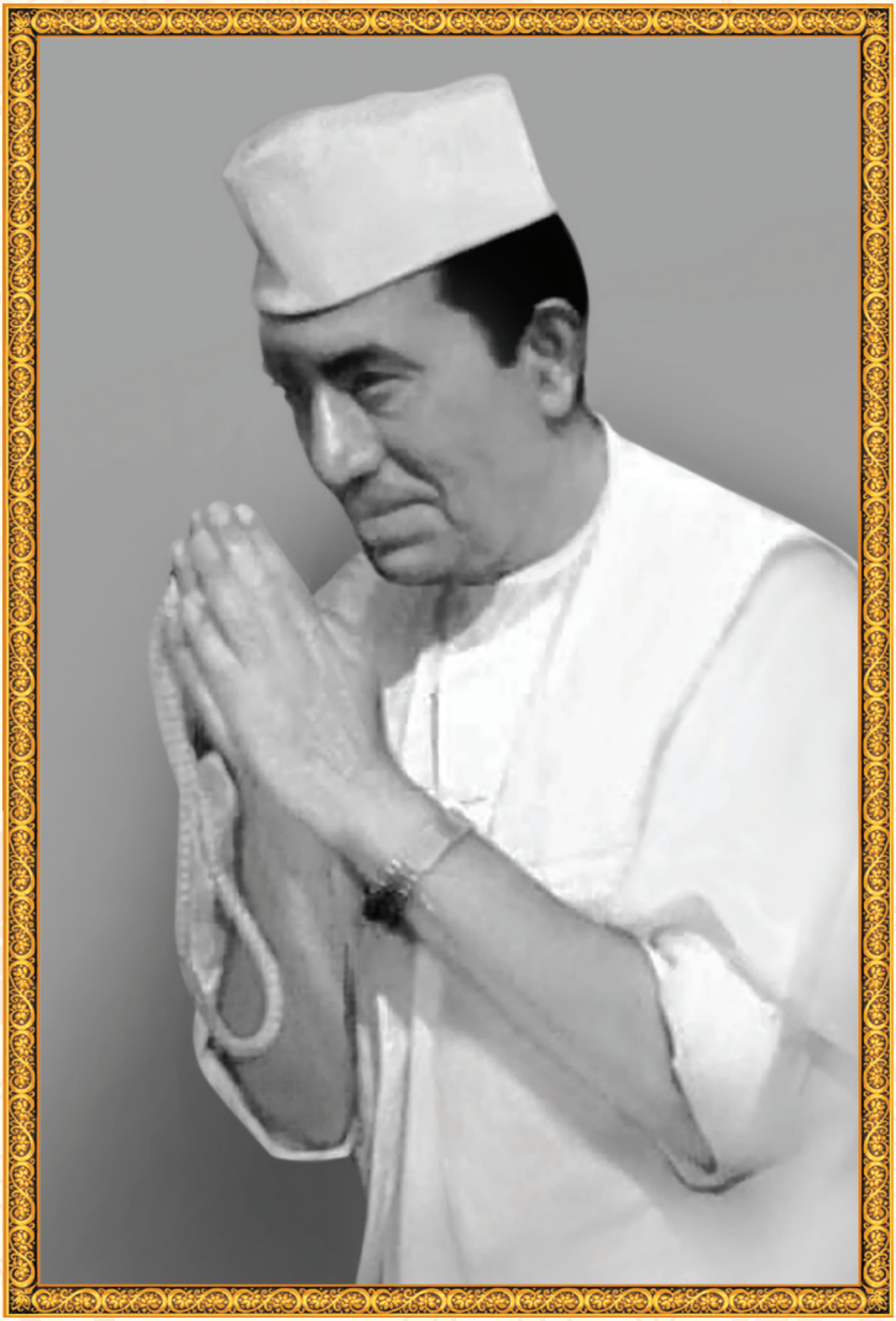

''प्रेमनाथ जी जो प्रार्थना करते हैं वह पूर्ण हो जाती है।''

स्वामी जी महाराज, साधना सत्संग हरिद्वार, 2-4-1958, प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 297

Bowing before Swami Ji

Param Pujniya Swami Ji Maharaj on Param Pujniya Prem Ji Maharaj

He is a good-looking, well-dressed young man. He is very sacrificing, humble and spiritually accomplished. The Voice of God descends on him. When he prays for someone, he is divinely guided and inspired.

(Ramayani Satsang Haridwar, 1956, Pravachan Piyush, p. 427)

If Prem Nath Sethi Ji prays for someone, it is fulfilled. If it is inappropriate, a voice tells him not this, pray for something else. A sadhak's heart should be pure and chaste.

(Sadhana Satsang Haridwar, 2.4.1958, Pravachan Piyush, p. 311)

Prem Nath Ji's prayers are fulfilled. If it is inappropriate, a voice tells him so. There was a minister who suffered from heart disease. He was very stubborn. Prem Ji thought it would be better for him to stay alive. He was a leader after all. He wanted that he should live on and subsequently become less obstinate. Prem Ji prayed for the minister but a voice told him not this, pray for something else.

(Sadhana Satsang Haridwar, 2.4.1958, Pravachan Piyush, p. 297)

Shri Prem Ji suggested that Shri Maharaj Ji (Shri Swami Ji) had frequently been lying on his left side. Possibly by turning him on his left side he will get relief. No sooner was he made to lie on his left side than he placed his right hand on Prem Ji's shoulder and tried to pull him very closest.

(Pravachan Piyush, introduction, p. 11)

This has been written about Swami Ji final moments before his Nirvaan on 13th November, 1960. ■

परम पूजनीय महाराज जी:
परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के विषय में

संत गुरु मरा नहीं करते। उनका शरीर मर जाता है, उनका गुरुत्व शाश्वत है। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का अपना परिचय है, उन महात्मा का अपना जीवन। उनका असली नाम प्रेम मूर्ति श्री प्रेम जी महाराज होना चाहिए था। प्रेम तो भक्तजनों! निराकार होता है, उसका साकार रुप है सेवा। सेवा सदन प्रेम जी महाराज। सेवा की मूर्ति पूज्य श्री प्रेम जी महाराज। जिसने सेवा करनी होती है उसके अन्दर विनम्रता भी होती है, अन्यथा सेवक नहीं बन पाएगा। सबसे प्रेम करने वाला भी होता है। पक्षपाती सेवक नहीं कहा जा सकता। वह क्षमावान भी होगा छोटी– छोटी बात पर गुस्सा करने लगे तो वह सेवा क्या करेगा? क्षमा सिन्धु होता है, क्षमा का सागर होता है वह। सहनशील भी, क्षमावान भी, अतिशय विनम्र भी। इन तीनों को मिला कर तो बनते हैं प्रेममूर्ति श्री प्रेम जी महाराज। पूज्य श्री महाराज ने अपने जीवन में कोई पुस्तक नहीं लिखी। आप सच समझें, सच मानें तो उनका जीवन ही उनकी रचना है। जीवन ही पुस्तक है। जो कुछ उन्होंने अपने जीवन में उतारा, उससे अधिक प्रवचनों में कहा नहीं। ''आप कहो कागज की लेखी, मैं कहूँ आँखिन की देखी।'' जो महाराज श्री ने अपने जीवन में उतारा, वही प्रवचनों में कहा। जो जीवन में उतार नहीं सके वह वे बोले नहीं। यह कोई छोटी बात नहीं है। उनका अपना जीवन ही उनका परिचय है। जिन्दगी भर कभी आगे होकर नहीं बैठे। साधना सत्संगों में जो हॉल के बाहर पायदान होते हैं, वहाँ बैठा करते। रात्रि को स्वामी जी महाराज के कमरे के आगे बैठा करते। मात्र बैठा नहीं करते, सोया नहीं करते। ऊँघा नहीं करते। अपना सिर अपना मस्तक उनके कमरे की दहलीज पर लगा कर रखते। ऐसी गुरु भक्ति, ऐसी अद्वितीय सहनशीलता, क्षमा किसी अन्य महात्मा में नहीं मिलती। आगे होने का शौक ही नहीं था। अपने आपको इतना छुपा कर रखा, इतना पीछे कर के रखा। पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने, बाबा ने ऐसे हीरे को पहचाना। सदा पीछे बैठने वाले को इस प्रकार से आगे कर दिया कि युगों युगान्तर तक इस महात्मा को, प्रेम जी महाराज को कोई अब पीछे नहीं कर सकेगा। कैसा कुल है हमारा। किस उच्च परिवार के सदस्य हैं हम। कुछ न कुछ तो इनके जीवन से अपने जीवन में उतारना चाहिए। युवक लोगो उतारना चाहिए न, कुछ न कुछ तो आना चाहिए। हमारे जीवन में कुछ न कुछ तो आना ही चाहिए तभी कुल आगे चल पाएगा।

(श्री महाराज जी, प्रवचन, 29 जुलाई, 2008) ■

एक समर्पित जीवन की कुछ झलकियाँ

किसी संत की जीवनी लिखना आसान नहीं है। उनकी जीवन यात्रा को हम सांसारिक नजरों से नहीं आँक सकते हैं और ना ही उनके आन्तरिक आध्यात्मिक जीवन की गहराई की थाह ले सकते हैं। हम तो महज सार्वजनिक जीवन में नजर आने वाले उनके बाहरी व्यक्तित्व को ही देख पाते हैं। हमारे गुरुजन जैसे संत स्वयं को एक साधारण व्यक्ति की तरह ही दिखाते थे। उन्होंने अपने माहात्म्य को हमेशा छुपाकर, ढककर रखा। प्रेमजी महाराज बहुत कम बोलते थे। विशेषकर अपने बारे में कभी कुछ नहीं कहा। ऐसी स्थिति में उनके जीवन के बारे में लिखना एक चुनौती है। इन सीमाओं के बावजूद हमने पूजनीय प्रेमजी महाराज के जन्म–शताब्दी के उपलक्ष्य में उनके व्यक्तित्व के कुछ आयाम और उनके जीवन की कुछ घटनाओं का विवरण करने का प्रयास किया है। विशेषकर उन साधकों के हितलाभ के लिए है जिन्हें पूजनीय प्रेमजी महाराज से साक्षात्कार का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ। यह प्रस्तुत रेखांकन किसी भी प्रकार से एक व्यापक जीवन चित्र नहीं है। सत्य साहित्य के आगामी अंकों में परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के जीवन की प्रेरणादायक घटनाएँ प्रकाशित होती रहेंगी।

1947, लायलपुर एयरफील्डः विभाजन के तनाव में फँसे लोगों को सुरक्षित भारत पहुँचाने के लिए विमान उड़ने के लिए तैयार था। यात्रियों की सूची के अनुसार एक व्यक्ति के लिए अभी भी इंतजार हो रहा था। उनके बुजुर्ग माता–पिता आशंकित उनके विमान में आने की राह देख रहे थे कि 'प्रेम नाथ सेठी' के लिए अंतिम घोषणा की गई। घोषणा के बाद भी उनके न पहुँचने पर विमानकर्मी दरवाजा बंद करने की तैयारी में ही थे कि वे भागते हुए विमान की तरफ पहुँचे। व अन्य पीड़ित परिवारों की देखभाल करने में और उन्हें ढाढ़स बँधाने में अपने विमान की सुध–बुध भूल चुके थे।

दिल्ली में उनके भाई ने काफी मुश्किलों से परिवार के लिए हवाई–टिकट की व्यवस्था की थी। इसकी जानकारी उन्हें संयोग से लायलपुर में एक सार्वजनिक स्थान ओर radio उदघोषणा द्वारा मिली।। हाँफते हुए वे अपनी जगह पर बैठे और अपने माता–पिता को आश्वस्त किया कि वे ठीक हैं। जैसे ही हवाई जहाज लायलपुर

Clock Tower, Lyallpur, now Faisalabad

कि उस मिट्टी को छोड़ कर ऊपर उठा जो अब जल्द ही पाकिस्तान के नाम से जाना जाएगा, उन्होंने मुड़कर अपनी श्रद्धेय माताजी को कहा, "जो छोड़ दिया उसका नाम मत लेना पर परमात्मा का शुक्रगुजार होना कि हम सब सुरक्षित हैं।"

लायलपुर छोड़ने के कई महीने पहले तक सेठी परिवार अपनी सुरक्षा और भविष्य की अनिश्चितता को लेकर चिंताग्रस्त थे। लायलपुर को सांप्रदायिक तनाव के वातावरण ने जकड़ रखा था क्योंकि वह भारत और पाकिस्तान के बीच विवादित स्थानों में से एक था। ऐसे में, सेठी परिवार के लिए इस शहर में रहना कठिन होता जा रहा था क्योंकि उनका घर एक मुस्लिम इलाके के पास था। अक्सर उन्हें पास के सुरक्षित माने जाने वाले पड़ोस के इलाकों में शरण लेनी पड़ती थी। उस समय उनका पूरा परिवार बिखरा हुआ था; बड़े भाई पश्चिमी उत्तर प्रदेश में, मंसूरपुर में रहते थे, दूसरे बड़े भाई दिल्ली में, बड़ी विवाहिता बहन पश्चिमी पंजाब में, सरगोधा में और छोटे भाई–बहन दिल्ली में थे। कुछ महीने पहले महाराज जी के माता–पिता ने उनकी छोटी बहन को दिल्ली भेजने का निर्णय लिया जिसका जिम्मा महाराज जी को दिया गया। दिल्ली जाने पूर्व महाराज जी बहन को परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के दर्शन के लिए देहरादून लेकर गए और स्वामी जी के कहने पर वे दोनों दिल्ली जाने से पहले कुछ दिनों के लिए वहाँ रुके।

विभाजन ने पूरे परिवार की जिंदगी उथल–पुथल करके रख दी थी। उन्हें अपना घर अकस्मात छोड़ना पड़ा। उन्होने अपनी दो गाएँ, भैंस को खोल दिया और घर की चाभियाँ, पारिवार के एक मित्र को दे कर चल दिए। अपने साथ सिर्फ ज़ायदाद के क़ागज लिए। दिल्ली

सुरक्षित पहुँचने के पश्चात् परिवार को अब किसी प्रकार की हिंसा का डर नहीं था हालाँकि भविष्य को लेकर अनिश्चितता बनी रही।

पूजनीय प्रेम जी महाराज जी ने विभाजन के दिनों के अपने संस्मरण महाराज डॉ विश्वामित्र जी को बताए : ''मेरी पोस्टिंग जड़ावाले में थी। वहाँ एक संत रहा करते थे। यह जुलाई 1947 की बात है। वे साधु पठानकोट के ऊपर एक जगह है, वहाँ आश्रम में जाना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि मैं छोड़ आता हूँ। हम एक बस में जाने लगे, हिन्दू कन्डक्टर था, उसने कहा... बस से जाना ठीक नहीं, फिर ट्रेन में गए, लाहौर पहुँचे और फिर पठानकोट। उनको लेने बहुत लोग आए हुए थे तथा अनेकों प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरा मन था कि मैं वहाँ ठहरुँ, पर उन्होंने कहा कि आज ही वापिस चला जाऊँ। मैंने सोचा अब इन्होंने कहा है तो जाना ही चाहिए। लाहौर से जड़ावाले जिस गाड़ी में पहुँचे वह आखिरी गाड़ी थी। उसके बाद कोई गाड़ी नहीं आई, यह सब परमेश्वर कृपा है।''

एक और संस्मरण में महाराज जी को बताया : ''किसी एक परिवार में पत्नी के thigh पर गोली लग गई। पत्नी गिर गई, बच्चों ने तथा बाप ने कहा कि अपनी जान बचाओ और उसे छोड़ कर चले गए। औरत की अभी साँस बाकी थी। किसी ने उसके ऊपर कम्बल डाल दिया। शायद महाराज उसे किसी पास वाले कैम्प में छोड़ आए थे।''

परम पूजनीय श्री महाराज का जन्म शनिवार, 2 अक्तूबर 1920 को लायलपुर में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री जयराम दास सेठी और माता जी का नाम श्रीमती लाजवंती था। उनकी एक बहन और दो भाई उनसे बड़े थे और एक बहन और तीन भाई छोटे थे। उनके पिता एक प्रतिष्ठित वकील थे, जिनका समाज में बहुत आदर था। उनकी माँ एक गृहणी थीं जो कि एक अत्यन्त शिक्षित परिवार में पली बढ़ी थीं। माता जी के पिता पेशे से सिविल सर्जन थे। प्रेम जी महाराज के परिवार के लिए शिक्षा का हमेशा से बहुत महत्व था। भाइयों के साथ–साथ उनकी बहनों ने भी प्रतिष्ठित शिक्षा–संस्थानों से शिक्षा ग्रहण की थी।

पंजाब के झंग जिले में परिवार की पुश्तैनी ज़मीनें थीं वहाँ से ऊँट पर अनाज, दालें इत्यादि आया करती थीं। उसमें से अनाज के पाँच बोरे पहले पास के गुरुद्वारे को दिए जाते थे। महिलाओं का परिवार में बहुत आदर था और आर्य–समाज के प्रभाव के कारण वे जातिवाद के सख्त विरुद्ध थे। बहनें बताती हैं कि बचपन में कई बार सुबह आँख खुलने पर वे प्रेम जी महाराज को ध्यान में बैठा हुआ पाती थीं, विशेषकर पूर्णिमा के दिन। बचपन में वे अपने छोटे भाई–बहनों को भी अकसर ध्यान में बिठाते थे। छोटी उम्र में ही वे साधु–संतों की संगत पसंद किया करते थे और कभी–कभी कुछ समय के लिए उनके साथ चले जाया करते थे। बचपन से ही एक ब्रह्मचारी जीवन की तरफ उनका झुकाव था।

लायलपुर में उनके पिता का एक बड़े अहाते वाला दो मंजिला मकान था। इसकी एक ओर मेहराबें बनी हुई थीं। अंदर जाने के लिए दो गेट थे। एक गोल बाज़ार की तरफ था, जिसका इस्तेमाल पिता जी से मिलने आने वालों के कार और तांगों के लिए हुआ करता था। उस ओर एक बरामदा था, जहाँ मिलने वाले आकर बैठा करते थे। घर का दूसरा गेट जामा मस्जिद सड़क की ओर था और इसका इस्तेमाल परिवार अपने आने–जाने के लिए करता था। बैठक और खाने का कमरा इसी ओर था। परिवार के सोने के कमरे दूसरी मंजिल पर थे। पीछे की तरफ गौशाला थी।

प्रेम जी महाराज शुरु से ही महिलाओं की शिक्षा को बराबरी की अहमियत देते थे। वे शिक्षा को आत्मनिर्भर करने का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन मानते थे, बाद के दिनों में उन्होंने श्रीरामशरणम् की कई महिला (साधकों) को शिक्षित होने और नौकरी करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि ये तीन प्रकार से उनकी मदद करेगा; पहला, वे आर्थिक रुप से स्वतन्त्र होंगी, दूसरा, वे अपने परिवार व दूसरों की मदद करने में सक्षम

Punjab Agricultural College, Lyallpur, present-day view

होंगी और तीसरा, वे अपने–आपको व्यस्त रख पाएँगी।

आर्य स्कूल, जो आर्य समाज से जुड़ा एक सह–विद्यालय था से स्कूली शिक्षा पूरी की थी इसके बाद उन्होंने Punjab Agriculture college and Reserch Institute, लायलपुर में दाखिला लिया। इस संस्थान से 'कृषि विज्ञान' की डिग्री मिलती थी। इसके अंतर्गत अनेक स्पैश्यलाइज्ड विषयों जैसे अनाज, तेल, बीज, फल और सब्जियों की विविध नस्लों को उगाने के तरीके तथा plant pathology, plant agronomy पढ़ाए जाते थे। संस्थान 1,950 एकड़ के विशाल परिसर में बना था। वहाँ के फार्म पर प्रयोगात्मक रुप से कई प्रकार के फसलें उगाई जाती थीं। कभी–कभी प्रेम जी महाराज अपने भाई–बहनों के लिए प्रयोगात्मक रुप से उगाए जा रहे खजूर ले कर आते थे।

इन सबके दौरान उनकी अन्य गतिविधियाँ भी साथ–साथ चल रही थीं। वे जल्द ही अच्छे तैराक बन गए और उन्हें अपने छोटे भाइयों को तैराकी सिखाने में उन्हें आनन्द आता था। वे सभी पास के नहर में तैराकी के लिए अकसर जाया करते थे। प्रारम्भिक दिनों में प्रेम जी महाराज को जानने वाले बताते हैं कि वे योग में सिद्धहस्त थे। बचपन से ही साईकल चलाते थे और लायलपुर में आना–जाना वे साईकिल से ही किया करते थे। बाद में, लायलपुर से जड़ावाला, जहाँ उनकी नियुक्ति थी की 40 किलोमीटर की दूरी वे साईकिल से ही तय किया करते थे।

स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद इन्होंने नौकरी शुरु कर दी। नौकरी के सिलसिले में उन्हें अकसर दौरा करना पड़ता था जिसके कारण उन्होंने एक घोड़ा रख लिया था। सम्भवतः कृषि संस्थान में बिताए वर्षों और तत्पश्चात नौकरी के दौरान उन्हें जड़ी–बूटियों और पौधों को नज़दीक से जानने का और समझने का मौका मिला, जिसके कारण उनका झुकाव चिकित्सा और दवाइयों की ओर हो गया।

युवावस्था में प्रेमजी महाराज का लायलपुर घर में आतिथियों को खाने पर लाना एक सामान्य बात थी। हालाँकि, ये लोग परिवार के लिए अजनबी थे लेकिन महाराज उनका परिचय 'भाई–बहन' कह कर कराते थे। इनमें कई जरूरतमन्द लोग भी थे जिन्हें वे लेकर आते थे। प्रेमजी महाराज के लिए परिवार का अर्थ करीबी सगे–संबंधियों से कहीं ज्यादा था।

परम पूजनीय स्वामीजी महाराज के प्रथम दर्शन का सौभाग्य प्रेम जी महाराज को लायलपुर में ही प्राप्त हुआ था। स्वामीजी महाराज का अक्सर लायलपुर आना होता था। उनके प्रवचनों को सुनने के लिए लोग उमड़ते थे। महाराज जी का परिवार भी स्वामीजी के प्रवचनों को सुनने के लिए जाया करता था। जब स्वामीजी महाराज के समक्ष प्रेमजी महाराज पहली बार पहुँचे तो स्वामीजी ने उनसे कहा, "मुझे आपका इंतजार था।" उस दिन के बाद से महाराज ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। स्वामीजी के प्रति उनका आकर्षण और उनकी भक्ति बढ़ती चली गई। जब भी संभव होता प्रेम जी महाराज स्वामी जी के पास जाने की चेष्टा करते। जितना अधिक जा सकते थे, जाया करते और उनके पास ठहरते।

विभाजन से पहले के वर्षों से ही स्वामी जी महाराज के सान्निध्य में आने का सुअवसर महाराज को प्राप्त हुआ। स्वामी जी महाराज ने उन पर कृपा करके उनको अपनी यात्रा सम्बन्धी योजनाओं की जानकारी देना और सलाह लेना प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् स्वामी जी अपने ग्रन्थों की

प्रिंटिंग और प्रसारण के विषय में भी प्रेम जी महाराज से परामर्श लेते थे। गुरु के प्रति शिष्य का समर्पण बढ़ता चला गया और उनके बीच आत्मीयता गहन होती चली गई।

विभाजन के उपरान्त दिल्ली में एक स्थाई निवास को खोजने में परिवार को समय लगा। आरम्भिक दिनों में इन्हें रिश्तेदारों के साथ रहना पड़ा, अन्त में वे दक्षिणी दिल्ली के निज़ामुदीन क्षेत्र में एक किराए के घर में रहने लगे। महाराज जी के भाई बहन, अलग–अलग स्थानों में रहते थे, परन्तु महाराज जी अपने माता–पिता के साथ रहे। इस दौरान उनकी प्राथमिक आवश्यकता नौकरी ढूँढने की थी। वे लायलपुर में एक स्थाई सरकारी नौकरी को छोड़ कर आए थे। उन दिनों वे जिन कठिनाइयों से गुज़रे उसका एहसास हमें उनके द्वारा महाराज जी को बताई इन बातों से होता है :

''कनाट–प्लेस में कॉफी–हाउस था वे सब वहाँ खाना खाया करते थे। मैं दूर जाकर कुछ खा आया करता था। कोई अधिक नहीं, कोई अच्छा भी नहीं, पर वे सब यही कहा करते कि मुझे कुछ काम करना चाहिए। मैं सोचा करता, मैं तो किसी पर बोझ नहीं, फिर यह सब मुझे ऐसा क्यों कहते हैं?'' महाराज ने आगे बताया, ''एक अंग्रेज़ से मैं मिला, कहा कि मुझे Yogic massage आती है। उन्होंने मुझसे एक article लिखवाया on Yogic cure. मैंने लोगों की मालिश करनी आरम्भ की। आधे से दो घंटों में दस–पंद्रह रुपए कमा लिया करता था। पाँच रुपए एक मालिश के लिया करता था। जब ये काम चलने लगा तो औरों ने कहना शुरु किया कि कमाल है, एक घंटा काम नहीं करता और दस–पंद्रह रुपए कमा लेता है। उन्हीं दिनों लोगों ने मेरी फोटो खींच ली और एक अखबार के front page पर फोटो समेत मुझ पर article निकाला। मैंने यह सब स्वामी जी को बताया तो बहुत खुश हुए।''

प्रेम जी महाराज अब एक स्थायी नौकरी की खोज करने लगे। उन दिनों में शरणार्थियों को सरकारी नौकरी के लिए प्राथमिकता दी जाती थी। सबसे पहले उन्होंने Horticulture Department में नौकरी की और उनकी पूर्वी पंजाब में, करनाल में नियुक्ति हुई। इस नौकरी के अन्तर्गत उन्हें बहुत यात्रा करनी पड़ती थी तथा उन्हें हिसार एवं अन्य स्थानों पर भी जाना पड़ता था। पूज्य स्वामी जी महाराज के *प्रवचन पीयूष* में आलेखिक किया है: ''उसकी उस समय अस्थाई नौकरी थी। मेरे कहने पर होमियोपैथी (By correspondence) सीखी।'' {प्रवचन पीयूष, प. 270.}

महाराज जी की घड़ी

कई महीनों के पश्चात् 1950 में उन्हें भारत सरकार के Central Water Commission में नौकरी मिल गई, जिसका कार्यालय दिल्ली में था। अपनी छोटी आयु के बावजूद उनके ऊपर कई तरह के उत्तरदायित्व थे। उन्हें अपने माता–पिता की देखभाल करनी थी। इसके अतिरिक्त स्वामी जी के प्रति भक्ति उनका मुख्य लक्ष्य था। अब वे स्वामी जी के समस्त भक्तों को अपने परिवार के समान देखने लगे। उन्होंने अनवरत इन सभी दायित्वों को बिना किसी समझौते के निभाया।

कोई इस वास्तविकता से भी इन्कार नहीं कर सकता कि उनके पास पूरे समय के लिए सरकारी नौकरी थी। वे अपने कार्यालय के कामों को पूरी तरह करते थे और हर एक व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आता था उसकी सेवा करने का कोई अवसर नहीं छोड़ते थे। इसमें उनके सहकर्मी, उच्च अधिकारी एवं वह व्यक्ति, जो ऑफिस में सबके लिए चाय लाता था, वह भी शामिल थे। वे कई बार स्वामीजी के अनुयायियों का ध्यान रखने के लिए अ फिस से जल्दी निकलते थे। उनके सहकर्मी भी जो उनके इस आध्यात्मिक पक्ष को नहीं जानते थे, उन्हें भी महाराज जी के चेहरे पर नूर एवं चमक दिखाई देती थी। अनेक साधक याद करते हैं कि उनकी आँखों में बहुत शक्ति है। एक साधक ने अनुसारः ''मैं सूरज को देख सकता हूँ पर उनकी आँखों में नहीं देख सकता।''

श्रीरामशरणम् परिवार में पूज्य श्री महाराज जी शक्ति–स्तम्भ, पथ–प्रदर्शक एवं समस्याओं को सुलझाने वाले बन गए।

पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा, ''प्रेम जी को बड़ा सिधाया। उसने शादी की नहीं। मेरे कहने पर थोड़ा वेतन होते हुए भी सौ रुपए घर वालों को दिया करता।'' {साधना सत्संग हासी, 21-11-1957, प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 270}

अपने कर्तव्यों को अत्यन्त ईमानदारी के साथ निभाते हुए, जो समय वे पूज्य स्वामी जी महाराज के साथ व्यतीत

करते थे, वह उनके लिए सर्वाधिक मूल्यवान था। वे केवल साधना सत्संग एवं स्वामी जी के दर्शन हेतु ही छुट्टी लिया करते।

स्वामी जी महाराज एवं पूज्य श्री महाराज जी के बीच में परस्पर बढ़ती हुई घनिष्ठता की झलक उनके पत्रों में एवं स्वामी जी के प्रवचनों में मिलती है। हरिद्वार में 1956 के रामायणी सत्संग में स्वामी जी ने, प्रेम जी महाराज के बारे में कहाः ''वह छैल छबीला, सजा–धजा युवा है, बड़ा त्यागी, विनीत, पहुँचा हुआ है। भगवान की देववाणी का उस पर अवतरण होता है। किसी के लिए कामना करे, तो सुझाव के स्तर में तरंगें पैदा होती हैं।'' {रामायणी सत्संग हरिद्वार, 1956, प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 427.}

एक अन्य संदर्भ 2 अप्रैल 1958 में साधना सत्संग में स्वामी जी महाराज ने कहा, ''प्रेमनाथ जी किसी के लिए प्रार्थना करें, तो वह पूरी हो जाती है। अनुचित होने पर उन्हें आवाज़ आ जाती है कि यह नहीं कोई और बात करो। साधक का हृदय निर्मल, पवित्र होना चाहिए।'' {साधना सत्संग हरिद्वार, 2-4-1958, प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 311.}

इन वर्षों में प्रेम जी महाराज जी ने जितना अधिक से अधिक समय सम्भव हो सका, पूजनीय स्वामी जी के साथ व्यतीत करना प्रारम्भ किया। जब परम पूजनीय स्वामी जी 'रामायण जी' का 'परिशिष्ट' लिख रहे थे, तब प्रेम जी महाराज अवकाश लेकर स्वामी जी के साथ देहरादून में रह कर, उनकी सहायता करते रहे। बाद में स्वामी जी ने याद किया,'' मैंने तुलसीकृत रामायण से कुछ, पहले पेन्सिल से लिखना आरम्भ किया। प्रेम जी बाद में लिखा करें। उसने एक महीने की छुट्टी ली। प्रेम जी ने पूछाः 'दूसरों के लिए विचार आना और उनके सुस्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करना–क्या इसमें कोई हर्ज़ तो नहीं?' मैंने उत्तर दिया कि,'दूसरों के हित के लिए प्रार्थना करना, यह बहुत अच्छा है। मैं भी राम–नाम के जपने वालों के लिए करता हूँ।' पूर्णमासी को जिन्होंने नाम जपा, उनका मन बड़ा अच्छा टिके। संकल्प में प्रार्थना से एकदम प्रभाव तब होता है, जब आदमी का अपना आप अच्छा हो। झूठ न बोलना, ईर्ष्या न होना आदि। इससे संकल्प में बल आता है, यह भी मैंने बताया।'' {प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 270.}

सन् 1957–1958 के वर्षों में परम पूजनीय स्वामी जी दिल्ली में अधिक समय व्यतीत करने लगे। शुरु में वे बाराखम्बा रोड में रहे और बाद में लाला भगवानदास कत्याल जी की बंगलो रोड स्थित कोठी में रहे। प्रेम जी महाराज ने अपने निवास की बंगलो रोड के समीप कमला नगर में व्यवस्था की, जिससे वे स्वामी जी के समीप रह कर उनकी सेवा–शुश्रूषा कर सकें। प्रातः काल स्वामी जी के जगने से पूर्व ही वे बंगलो रोड पहुँच जाते थे और सायं काल दफतर से सीधे वहाँ आ जाते थे।

परम पूजनीय स्वामी जी और वे काफी समय साथ व्यतीत करते थे। रात्रि में प्रेम जी महाराज विश्राम करने के लिए मना करते थे और परम पूजनीय स्वामी जी के कमरे के बाहर खड़े रहने के लिए ज़ोर देते थे। एक बार लाला भगवान दास जी की पत्नी, (माता जी) पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के लिए मूड़ा लाईं और बैठने को ज़ोर दिया। महाराज जी ने मना करते हुए हुए कहा कि बैठने से आँख लग जाएगी।

इन वर्षों में परम पूजनीय स्वामी जी का स्वास्थ्य कमज़ोर होने लगा। पूजनीय प्रेम जी महाराज स्वामी जी के समीप रह कर दिन–रात उनकी सेवा करते रहे। परम पूजनीय स्वामी जी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि प्रेम जी महाराज उनके उत्तराधिकारी होंगे। इस बात का संकेत उन्होंने अनेक अवसरों पर अपने विषेश भक्तों को दिया। उदाहरण के लिए, एक बार प्रेम जी महाराज जब उनके कमरे आए, वहाँ बहुत से साधक बैठे हुए थे, उन्होंने अत्यन्त स्नेहमयी वाणी में स्वामी जी के शब्द सुनेः ''आ गए गुरु जी''।

13 नवम्बर 1960 को जब परम पूजनीय स्वामी जी महाराज ने अपना शरीर छोड़ा, स्वामी जी के व्यक्तिगत चिकित्सक डॉ. संतोख सिंह, उनकी देख भाल कर रहे थे। प्रेम जी महाराज के साथ अन्य अनेक साधक अनवरत प्रार्थना में संलग्न थे। बाहर उद्यान में हज़ारों की संख्या में साधक उपस्थित थे। ''नमो नमः गुरुदेव तुमको नमो नमः'' की धुन लगातार गाई जा रही थी। परम पूजनीय स्वामी जी ने जाने की इच्छा प्रकट की और कमरे में उपस्थित साधकों से कहा,''प्रेम नाथ को बोलो मुझे जाने दे।''

अन्तिम क्षणों में ''श्री प्रेम जी कहने लगे कि श्री स्वामी जी महाराज जी प्रायः बाईं करवट से लेटते रहे हैं। सम्भवतः ऐसा करने से उन्हें आराम मिलेगा। जैसे ही श्री स्वामी जी महाराज को बाईं करवट लिटाया तो उन्होंने अपना दायाँ हाथ श्री प्रेम जी के कन्धे पर रखा और

उन्हें अपने अति निकटतम करने की चेष्टा की।'' {प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 11.}

पूजनीय स्वामी जी के भौतिक शरीर छोड़ने से पूजनीय प्रेम जी महाराज को गहरा सदमा लगा। वरिष्ठ साधकों ने प्रेम जी महाराज को उत्तराधिकारी बनने के लिए समझाया, जो स्वामी जी उन्हें बनाना चाहते थे। श्री स्वामी जी महाराज के निर्वाण के 17 वें दिन, 29 नवम्बर, 1960 में लाला भगवान दास जी के निवास स्थान पर अनेक संतों और सैकड़ों साधकों की उपस्थिति में एक समारोह का आयोजन हुआ। समस्त भक्तजनों ने सारे उद्यानों को भर दिया और जिसको जहाँ स्थान मिला, वह वहीं पर से आयोजन को देखने के लिए रुक गया। बाहर के खुले स्थान में पक्के फर्श पर, एक आम के वृक्ष के नीचे लाला भगवान दास जी ने, जो स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट के सदस्य थे, पूजनीय महाराज जी के माथे पर तिलक लगाया। इस ट्रस्ट की स्थापना स्वामी जी महाराज ने 1936 में श्री रामशरणम् के प्रशासनिक कार्यों को संभालने के लिए की थी। तिलक समारोह के उपरान्त लंगर का आयोजन किया गया।

पूज्य स्वामी जी महाराज के निर्वाण के पश्चात जो रिक्तता आ गई थी, पूज्य श्री प्रेम जी महाराज उसे बहुत गहराई से महसूस कर रहे थे, उनकी अनुपस्थिति को अनुभव कर रहे थे। उन्हें इस नई स्थिति के साथ तालमेल में भी कठिनाई हो रही थी। जब शुरुआत में उन्हें महाराज कह कर सम्बोधित किया जाता था, वे कहा करते,''यदि आप का नाम कोई बिगाड़ कर बोले तो आपको कैसा लगेगा?'' एक साधक ने उत्तर में पूछा, ''अगर आपको महाराज न कहें तो किसको कहें?'' पूजनीय प्रेम जी महाराज चाहते थे कि उनकी आध्यात्मिक शक्ति छुपी रहे व उन्हें एक साधक के रुप में ही जाने जाए।

श्रीरामशरणम् लाजपत नगर को बनाने की रुपरेखा बहुत पहले से ही बनाई जा चुकी थी। पूज्य स्वामी जी महाराज ने उस रुपरेखा पर अपनी सहमति भी दे दी थी। कई वरिष्ठ साधकों के प्रयासों से और परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के मार्गदर्शन में यह कार्य फलीभूत हुआ और 13 अप्रैल 1962 को दिल्ली श्रीरामशरणम् का शुभ उद्घाटन विधिवत् हुआ। उस वर्ष व्यास पूर्णिमा का साधना सत्संग यहाँ पर ही हुआ।

श्रीरामशरणम् दिल्ली का उद्घाटन एक मील का पत्थर साबित हुआ। पूज्य श्री प्रेम जी महाराज प्रातः यहाँ जल्दी

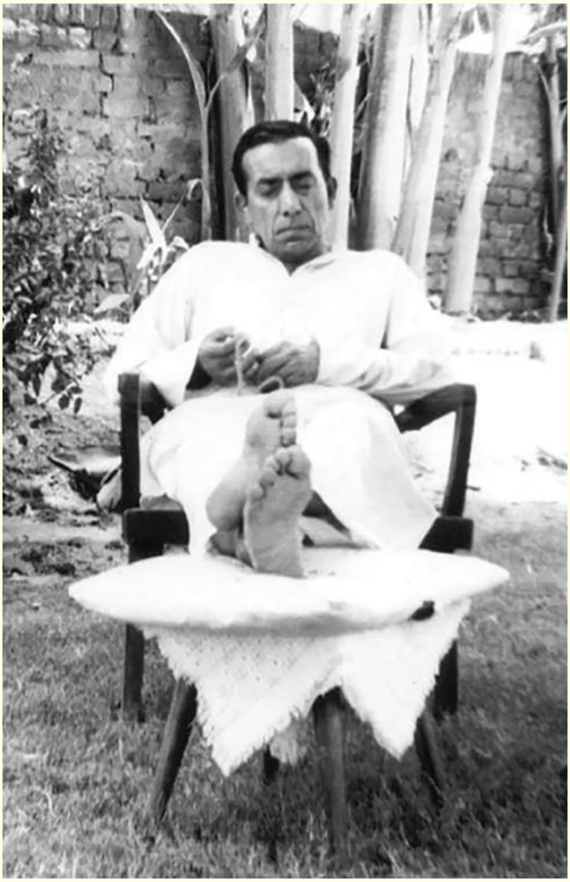

आया करते और सत्संग किया करते। तत्पश्चात् वे साधकों से मिला करते, उन्हें समय देते और फिर दफतर जाते। उस समय प्रायः बहुत संख्या में साधक उन्हें मिलना चाहते थे। साधक याद करते हैं कि उनसे मिलना कुछ क्षणों का होता था, प्रायः 1 या 2 मिनिट। महाराज जी के स्कूटर हार्न की आवाज़ आती, आस–पास रहने वाले लोग व साधक सपरिवार महाराज जी के दर्शन के लिए बाहर आ जात। महाराज जी सबको ''राम–राम'' बोलते, बुर्जुगों को नम्रता से सहलाते, बच्चों के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखते और अपने स्कूटर पर चले जाते। साधक अनुभव करते उनके क्षणिक दर्शन से ही उनकी व्याधियाँ दूर हो गई हैं, पारिवारिक तनाव समाप्त हो गए, उनको शान्ति और प्रसन्नता मिल गई है और उन्हें पूज्य स्वामी जी महाराज के साधना पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल गई है। महाराज जी के प्रयासों ने साधकों को श्रीरामशरणम् से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। बहुत से साधक याद करते हैं यदि परिवार का एक सदस्य भी श्रीरामशरणम् आने लगता, तो महाराज

अन्य सदस्यों को भी लाने को प्रेरित करते। परिवारों की श्रीरामशरणम् से जुड़ने की यह एक परम्परा बन गई व पूरा परिवार दीक्षा लेकर आने लगा।

इन वर्षों में महाराज जी की दिनचर्या बहुत व्यस्त रही। उन्होंने श्रीरामशरणम् के कार्य हेतु बहुत यात्राएँ कीं। यह साधकों के पत्रों से पता चलता है जो महाराज ने उन्हें लिखे। उदाहरण के लिए नवम्बर 1975 में उन्होंने एक् साधक को बताया।

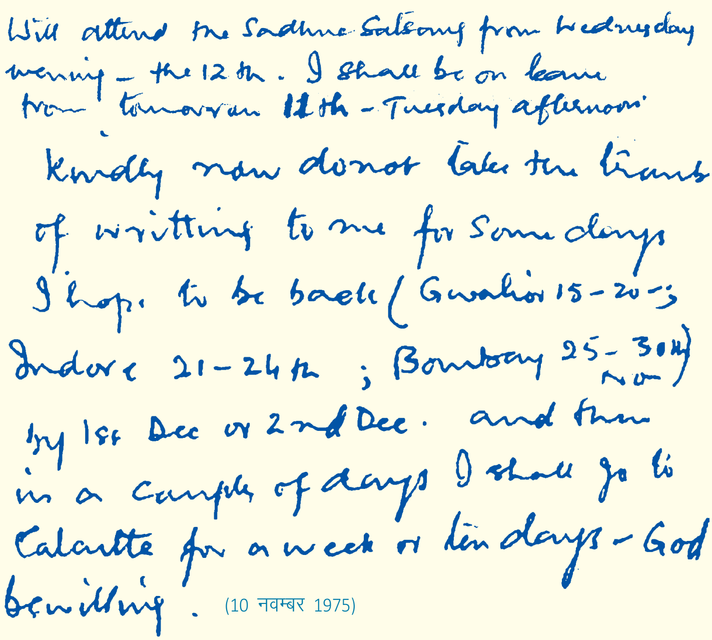

Will attend the Sadhna Satsang from Wednesday evening – the 12th. I shall be on leave from tomorrow 11th – Tuesday afternoon.

Kindly now donot take the trouble of writting to me for some days. I hope to be back (Gwalior 15-20; Indore 21-24th; Bombay 25-30th Nov) by 1st Dec or 2nd Dec. and then in a couple of days I shall go to Calcutta for a week or ten days – God willing.

(10 नवम्बर 1975)

कई नए श्रीरामशरणम् केन्द्रों के उद्‌घाटन सम्पन्न हुए–जैसे ग्वालियर, रोहतक और सिरसा। इस प्रकार श्रीरामशरणम् परिवार की वृद्धि हुई।

पत्र लिखना पूज्य श्री महाराज जी की दैनिक दिनचर्या में शामिल था। वे हर पत्र का उत्तर देते थे। वे साधकों का हाल पूछते और उनका मार्गदर्शन करते। साधकों से उनकी बातचीत, चाहे श्रीरामशरणम् में हो, या घर पर हो, या पत्रों के माध्यम से हो, स्वामी जी महाराज की परम्परानुसार, ये आध्यात्मिक होती थी। प्रेम जी महाराज उन्हें 'राम राम' जपने और अधिक जाप करने को कहते।

श्रीरामशरणम् के भीतर उन्होंने वही कार्य किए जो पूज्य स्वामी जी महाराज ने साधकों के लिए आदर्श स्थापित किए थे। उन्होंने स्त्री–पुरुषों में समानता को महत्व दिया न सिर्फ श्रीरामशरणम् में, अपितु व्यक्तिगत जीवन में भी। वे लड़कियों को उच्च शिक्षा के लिए और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करते रहे। उन्हें महिला साधकों की उपलब्धियों पर प्रसन्नता होती थी।

परम पूजनीय श्री महाराज के दिव्य व्यक्तित्व का एक पहलू यह भी था कि वे आरोग्य प्रदान करते थे। श्रीरामशरणम् में एक छोटी मेज़ पर कुछ होम्योपैथिक दवाईयाँ रखते थे, जो वह अपने भक्तों को निःशुल्क देते थे। वे अकसर अस्वस्थ्य साधकों को छूकर, उनकी गर्दन, कन्धें और पैरों की मालिश करते थे। यह सर्वविदित था कि उनके हाथों में रोग निवारण की क्षमता है जो दुःख–दर्द को दूर करती है। इसका मूल्यांकन करना कठिन है कि उन्होंने अपनी मूक मौन शक्ति से कितने लोगों को ठीक किया। यह अकसर कहा जाता था कि साधकों की शारीरिक पीड़ाओं को वे अपने ऊपर ले लेते थे। वरिष्ठ साधक उन्हें समझाते थे कि वे ऐसा न किया करें, क्योंकि यह उनके अपने स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। कुछ साधक अपने रोगों को उनसे छिपाने की कोशिश करते थे, पर एक "रोग निवारक संत" के ऊपर इसका कोई प्रभाव नहीं होता। इन वर्षों में दुर्भाग्यवश पूजनीय महाराज जी कुछ गम्भीर सड़क दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा। इनमें लगी चोटों को उन्होंने छुपाया और गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया। साधकों का मानना है कि औरों की रोगों को अपने ऊपर लेने के कारण अन्तिम वर्षों में उन्हें 'Parkinson' कि बीमारी हो गई।

सन् 1978 में अपनी नौकरी में 28 वर्ष सेवारत रहने के उपरान्त वे Central Water Commission से 25 अक्तूबर को सेवा निवृत हो गए। Commission ने एक प्रशंसनीय पत्र में उनके बारे मे लिखा कि वे :

"सच्चे अर्थ में सज्जन व्यक्ति व चमत्कारी व्यक्तित्व से ओत–प्रोत थे। वे जिस प्रकार स्नेह का उत्तर देते हैं और जिस सीमा तक अपने आस–पास के लोगों की सहायता करते हैं वे सचमुच आश्चर्यजनक है। CWC में बहुत लोग उनके आडम्बर रहित, प्रेमपूर्ण, निःस्वार्थ सहायता के अनेक छोटे–बड़े प्रसंग याद करते हैं। किसी ने उन्हें कभी क्रोधित होते नहीं देखा। उन्होंने निष्ठापूर्वक

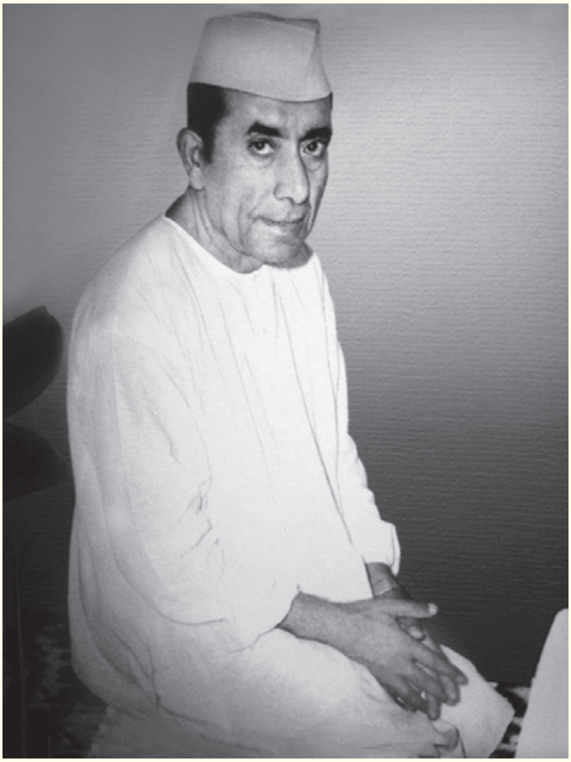

सेवा से, स्वयं को ईर्ष्या, लोभ, दंभ व महत्वाकांक्षा जैसी बुरी भावनाओं से दूर रखा। समर्पित सेवा का साफ सुथरा रिकार्ड - CWC का लम्बा सेवाकाल उनके जैसे परम पूजनीय व्यक्ति ने जिस विनम्रता व विनय के साथ पूरा किया, वह सच में उनकी महानता व साधुता का भावपूर्ण प्रमाण है।''

अपनी विदाई के अवसर पर उन्होंने एक ही बात कही कि उनकी सदा यही कोशिश रही कि वे किसी को भी दुःख न पहुँचाएँ।

अवकाश प्राप्ति के बाद श्री प्रेम जी महाराज ग्रेटर कैलाश में नए घर में चले गए जो कि श्रीरामशरणम् से बहुत पास था। अपने अन्तिम वर्ष उन्होंने उसी घर में बिताए। जो साधक उनके बहुत समीप थे, वे याद करते हैं, कि जब वे अकेले अपने कमरे में होते थे, तो ऐसा लगता था जैसे वे किसी से ज़ोर–ज़ोर से बातें कर रहे हैं। बातचीत के दौरान वे कभी ऊपर की ओर देखते, कभी मुस्कुराते और उनके चेहरे पर अद्भुत शांति दिखाई देती थी। साधकों ने यह भी देखा कि पानी का गिलास पकड़ते हुए, उनके हाथ बीच में रुक जाते, मानो अनायास ध्यान–मग्न हो गए हों। अपने आस–पास के वातावरण से अनभिज्ञ होने लगे। साधकों ने अनुभव किया कि उनकी आँखें और अभिव्यक्तियाँ यह स्पष्ट करती थी कि वे निर्विकल्प समाधि में हैं।

महाराज जी के सैंडल

इन वर्षों में पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का विशेष सम्बन्ध पूजनीय महाराज (डॉ. विश्वामित्र जी) के साथ हो गया, जो हिसार में एक विद्यार्थी थे। पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज ने उन्हें AIIMS, दिल्ली में डॉक्टरी की पढ़ाई करने के लिए बुला लिया। पूजनीय प्रेम जी महाराज दिन के भोजन के समय पूजनीय महाराज जी के कार्यालय AIIMS में जाते और इकट्ठे भोजन करते और बाद में कॉफी का आनन्द लेते।

कई अवसरों पर परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज अपना गुरु और शिष्य का आध्यात्मिक सम्बन्ध प्रकट करते थे। दिल्ली से बाहर जाते हुए वे अकसर साधकों से कहते ''चिन्ता की कोई बात नहीं, मैं डॉक्टर को यहाँ छोड़ कर जा रहा हूँ।'' यात्रा के दौरान वे अकसर पूजनीय महाराज जी को रविवार का सत्संग संचालन करने के लिए कहते और उनके संकोच करने पर एक बार कहा, ''आप मेरी बात नहीं मान रहे।'' तब महाराज जी ने उनकी आज्ञा का पालन किया और उस सप्ताह रविवार–सत्संग का संचालन किया। सत्संग के अंत में उन्होंने पूजनीय गुरूजनों की प्रिय धुन गाई, ''मेरे राम सर्वाधार बार बार नमस्कार।''

पूजनीय प्रेम जी महाराज ने 29 जुलाई 1993 को अपने भौतिक चोले को त्याग दिया। अपने जीवन काल में उन्होंने पूजनीय स्वामी जी की साधना की परम्परा को आगे बढ़ाया, आचरण और अनुशासन के उन ऊँचें आदर्शों को बनाए रखा, जो स्वामी जी महाराज के प्रमाण चिन्ह थे। श्रीरामशरणम् परिवार का विस्तार किया और सभी साधकों को उस अप्रतिबन्धित प्रेम का सहारा दिया, जो उनके नाम और उनके जीवन में सम्मिलित है। आज, इस सुअवसर पर जब हम उनकी 100 वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, वे अदृश्य रुप में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। हम स्वयं को, हमारे पूजनीय गुरुजनों द्वारा दिए गए आदर्शों के प्रति पुनः समर्पित करते हैं। ■

अमान

प्रेम

परमेश्वर परम कृपा स्वरूप है। उसके लिये सब समान हैं। वह अपनी रोशनी, चाँदनी, धूप, छाया, शीतल और गर्म वायु वर्षा आदि सब के घरों में एक ही दृष्टि से भेजता है। जैसे माँ सब बच्चों को एकरस होकर पालती है सब बच्चे उसको प्रिय होते हैं। इसी प्रकार जगन्मात जगदम्बा सब में विद्यमान – सब को आश्रय प्रदान करती है। सन्तों का यह विश्वास अचल चूलवत् दृढ़ है कि जैसे माँ को तोतली बोली बोलने वाला दीन असहाय बालक अति प्रिय होता है। इसी प्रकार श्रीराम को दीन मानहीन बालक के लिये अतीव स्नेह है। श्रीमानों के गृहों में जन्म लेकर प्रायः बच्चे पिछले जन्मों की कमाई साथ लेकर आते हैं। अतः बड़ी शीघ्र उन्नति कर जाते हैं। जिस भी क्षेत्र में वे पाँव रखते हैं – परमेश्वर की कृपा ही कृपा लाभ करते हैं। संसार में वही लोग सफल माने जाते हैं। उन्हीं की प्रशंसा होती है। उन्हीं के हाथों में दूसरों की बागडोर होती है। जिसको चाहें उभारें, जिसे चाहे डाटें और फटकारें। लोग भी आगे पीछे जी हज़ूरी करते हैं। भले ही कोई विद्यार्थी हो अथवा गुरु, गृहस्थी हो या साधु। कवि हो भजनीक हो, लेखक हो, कथावाचक हो, फिलास्फर हो, पालिटीशियन हो या साईंटिस्ट हो। यह देन तो उसी की है। जो आप अप्रकट स्वरूप होते हुए भी किसी को पात्र बना कर वचनों द्वारा अपने आपको अभिव्यक्त करता है। प्रायः लोग इस बात को समझते कम हैं। परम कृपा स्वरूप की भी ताड़ना करके अपने आपको ही कर्ता–धर्ता समझते हैं और दूसरों से आदर मान लेने की आकांक्षा रखते हैं। मान करवाने की इच्छा भी वह तृष्णा है जो कभी शान्त नहीं होती, दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है।

जिस तरह एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं, हृदय मन्दिर के आसन पर भी मान और भगवान दोनों नहीं विराज सकते। यह प्रायः देखा गया है कि जहाँ मान होता है वहां नाम जाप करते रहने पर भी मन अशान्त ही रहता है। दूसरे के मन को दुखाने से यदि अपने मन को टीस नहीं लगती तो यह समझना चाहिये कि ऐसा प्राणी मन्दिर में कितना भी मस्तक रगड़े परम धर्म की प्राप्ति होनी कठिन है।

वही उपासक परमेश्वर को प्रिय है जो दूसरों के दुःख निवारण करे और उनके सुख–साधन के लिये उसी तरह से यत्न करे जैसे निज सुख सिद्धि के लिये, यह सब गुण महाराज (स्वामी जी महाराज) में ही दीख पाये। वे अपने आप को बच्चों की तरह रखते थे। जिन्हें घर के बच्चे 'ताईजी' करके सम्बोधन करते थे। उन्हें महाराज(स्वामी जी महाराज)भी 'ताईजी' के नाम से ही बुलाते थे। यदि कोई कहता कि आप हमारे गुरु हैं तो महाराज (स्वामी जी महाराज) कहते – "मैं तो सेवा करता हूँ।" यद्यपि इतनी उच्च हस्ती थे पर उनमें कोई मान नहीं था। इतने सुन्दर ग्रन्थ रचे परन्तु कहते यही थे – "मैं कोई कवि थोड़े ही था बड़ी प्रेरणा होती तो मैं लिखने बैठता, कलम ऐसे चलती जैसे नदी का बहाव। जहां रुक जाती रुक जाती"। पहले कवितायें आई, फिर कथायें। इस प्रकार भक्ति प्रकाश आविर्भूत हुआ। परमेश्वर की प्रेरणा से ही वाल्मीकीय रामायण सार रचा गया। वे स्वयं परमेश्वर के परम धाम में रहते और दूसरों में भी उसी को देख कर सब बन्धुओं की आरती उतारा करते थे और कहते थे कि मैंने तो कभी किसी से नहीं कहा कि उसने मुझ से नाम लिया है। यह तो श्री राम ने मेरी झोली भर दी और मुझे कहा कि "यह दूसरों को भी दे"।

महाराज गरीबों को बहुत मान देते थे। दीन हृदय, जो अपनी कमाई करके खाते हैं और दूसरों की भी सेवा करते हैं। उन्हें बहुत अच्छा समझते थे। जो अपने आपको उच्च मानकर दूसरों को निम्न समझ कर अपने चरण छुआता, महाराज उसे कोई बहुत उच्च नहीं समझते थे। दूसरों की सेवा करने वालों से तो परमेश्वर विवश होकर उन्हें अपनी ओर खींच लेता है। जो देश की वेदी पर अपने प्यारे प्राणों की बलि देते हैं वे तो सीधे उच्च गति को प्राप्त होते हैं। परन्तु जो बलिदान के चक्कर को नहीं धकेलते, अपना ही स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं, उनका जीवन असफल ही मानना चाहिये। महाराज सदा यही कहते थे कि जब तक मैं सेवा कर सकूँगा तब तक इस जीवन में रहूँगा। कोई अन्त खराब करने के लिये नहीं जीता। जहां मान है वहां फीकी शान है परन्तु जहां सेवा है वहां भगवान् हैं।■

पत्रों के अंश

Excerpts from Letters

The three words that, in many ways, encapsulate the essence of Pujniya Prem Ji Maharaj's public life are humility, love and service.

Service for Him was a way of life. It was many layered. Pujniya Maharaj Ji started serving at a young age when he served his mother. He massaged her feet while studying in school so his school books were always full of oil marks. He was known for his eagerness to serve within the locality where he grew up. As he grew older, he served holy persons who he came in contact with. As he was due to take the last flight out to India in 1947, he served, almost missing the flight. He served Pujniya Swami Ji with total devotion. Refusing to take a seat outside his room, he stood in service. Such examples abound.

As mere disciples,it is almost impossible to understand His ways of service. He served all those who came in his contact, irrespective of who they were, irrespective of whether they were His disciples. Seeing all humans as manifestations of Shree Ram, He served in varied ways. Without speaking, he served.

He served by alleviating their troubles whatever they may have been. Sometimes it meant financial support, sometimes it meant support to careers, sometimes emotional support and often support to family structures, At every life stage of his disciples He served them. He served by helping them overcome their shortcomings and by blessing them regardless of their failings. Disciples never even recognized their own failings as He covered them up for them.

He also served by taking upon himself His disciples illnesses, by taking upon Himself their physical pain and suffering. Sadhaks know him as the Great Healer who takes their ailments upon himself. Some who have never seen him in physical form pray to Him and are healed.

At the higher level He served by uplifting them spiritually, by blessing them with deeksha, accepting them in the Shree Ram Sharnam fraternity and leading them to the path of Pujniya Swami Ji.

Even in his unseen presence He continues to serve and perform all these roles.

Pujniya Maharaj Ji wanted his disciples to serve wholeheartedly and guided them to do so. He guided them to perform what was for Him the simplest level of serving humankind. Especially dear to him was service to the poor and the needy. As he told a sadhak:

श्रीराम

8 Ring Rd
New Delhi 24
8th May

Pray keep on serving the poor as much as possible. Never mind those who feel jealous. It is their own bad luck

कृपया यथा सम्भव गरीबों की सहायता कीजिए। जो लोग ईर्ष्या करते हैं, उन पर ध्यान मत दो। ये उनका अपना दुर्भाग्य है। श्री राम का आशीर्वाद सदा आपके साथ है। बहुत सा प्यार।

(Letter dated 8 May, 1970s)

He always emphasized the need to serve the poor:

May God bless you. May you keep on serving the poor people.

(Letter dates 15 October, 1975)

Pujniya Maharaj Ji believed that the Almighty manifested himself in the poor and thus advised a sadhak:

*Heartiest Congratulations -
You are so fortunate ~~to~~
be at the Lotus Feet of
the Almighty where there
is poverty, there is Shri Ram
+ there you are!
Shri Ram
shall always be with you.
Hope you shall keep on
reciting all the time.
May God bless you.
Lots + lots + lots of love
Prem*

हार्दिक शुभकामनाएं। आप बहुत भाग्यवान हैं कि आप परमात्मा के चरण कमलों में हैं। जहाँ गरीबी है, वहाँ श्री राम और आप हैं। श्री राम सदा आपके साथ हैं। आशा है आप निरन्तर जाप कर रहें होंगे। भगवान आप पर अपनी कृपा बनाए रखें। बहुत बहुत व बहुत प्यार।

(Letter dated: 10 October 1973)

He wanted his disciples to help the needy, especially those who did not ask for help. As he put it:

*You may help the students
families who are poor + who
donot beg from you. Maharaj
used to say
"जो नहीं मांगते उन्हें देना चाहिए।"*

*Mostly people avoid accepting,
~~accepting~~ any thing from
any body. One will die of
hunger but not borrow.
I am so glad to learn that
you have lot of money as
your bank balance kindly
do help the poor. God will
surely bless you
May blessings of Shree Ram be
always with you.
Prem*

आपको गरीब व ज़रुरतमंद विद्यार्थियों की सहायता करनी चाहिए और जो आपसे माँगते नहीं हैं। महाराज (स्वामी जी) कहा करते,''जो नहीं माँगता उन्हें देना चाहिए।'' प्रायः लोग किसी से कुछ लेना नहीं चाहते। कोई भूख से मर जाएगा, पर माँगेगा नहीं। मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि आपके पास बैंक में पर्याप्त धन है। कृपया निर्धनों की सहायता करें। ईश्वर अवश्य आप पर कृपा करेंगे। श्री राम सदा आप पर कृपा बनाए रखें।

(Letter dated 27 May)

His expectation of his disciples was that they would serve in whatever capacity they were placed. As he put it:

*Pray do not think of
taking leave. Your
duty is also Meditation
May God bless you.
You will realise how
your presence over,
there has been a great*

help to the uplift of the
poor Countrymen.
May blessings of Shree Ram
be with you. Lots & lots & lots of
Prem

कृपया अवकाश लेने का न सोचें। आपका कर्तव्य ध्यान भी है। ईश्वर आप पर कृपा बनाए रखें। आप परमेश्वर का अनुभव करोगे। आपकी वहाँ उपस्थिति गरीब देशवासियों को ऊपर उठाने में सहायक रही है। श्री राम की कृपा सदैव बनी रहे। बहुत बहुत प्यार।

(Letter dated 28 June 1975)

Serving the country was something he urged His disciples to undertake: To him service to the country was much valued. As he wrote:

I am so happy that you are
working very hard & trying to
be strict in the interest of the
Country & the Nation.
Pray keep on doing your duty
boldly & God will bless you.
Pray keep on working hard &
leaving the rest to God.
May Blessings of Shri Ram be always
upon you. Lots & lots & lots of love
Prem

मुझे यह जान कर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप बहुत मेहनत कर रहे हैं और अपने देश व राष्ट्र के हित के लिए पक्के हैं। कृपया अपना कर्तव्य निडरता के साथ करते रहें और परमात्मा आप पर कृपा करेंगे। कृपया कठोर परिश्रम करते रहें और शेष ईश्वर पर छोड़ दें। श्री राम की कृपा आप पर सदैव बनी रहे। बहुत बहुत व बहुत प्यार।

(Letter dated 12 December, 1970s.)

In his unseen presence, Pujniya Maharaj Ji continues to perform the roles He took on in his physical body. ■

आदर्श शिष्य

आदर्श शिष्य के लक्षण ग्रंथों–शास्त्रों में एवं समय–समय पर गुरूजनों ने बताए हैं जिनमें आदर्श शिष्य बनने की प्रेरणाएँ दी हैं। अध्यात्म जगत् में वही शिष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता है, जो गुरू–संगति में बैठकर अपना जीवन आदर्शमय बनाता है।

आदर्श शिष्य गुरू वचनों पर पूर्णरूपेण आस्था रखकर, आज्ञाकारी बन, उनके वचनों का अक्षरशः पालन करता है। वह ग्रहणशील होता है। तभी उसे गुरू कृपा प्राप्त होती है।

आदर्श शिष्य निर्लोभी होता है। वह कामना–रहित रहता है। उसका जीवन अनन्य शक्तिमय होता है। वह विनम्रता की प्रतिमूर्ति होता है। अनुशासन का पालन करना उसका प्रथम कर्त्तव्य होता है। ऐसा शिष्य मनसा, वाचा, कर्मणा गुरू के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होता है। उसके जीवन में पग–पग पर शिष्टाचार समाहित रहता है।

आदर्श शिष्य निरभिमानी रहकर, सत्य का पालन कर, उच्च कोटि का चरित्रवान होता है। वह किसी अन्य की निंदा नहीं करता एवं अपना यशगान भी नहीं सुनता। वह एक विनम्र सेवक होता है। आदर्श शिष्य गुरूमुख होता है मनोमुखी नहीं।

"गुरू–मुख भक्त सराहिए, नियम धर्म गुणवान्।
ईश्वर प्रीतिमान् जो, शुद्ध सरल मतिमान्।।"

(भक्ति–प्रकाश, प. 418)

आदर्श शिष्य के जीवन में हर प्रकार की पवित्रता होती है और उसकी कथनी–करनी एक होती है।

पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज के आदर्श एवं अंतरंग शिष्य पूज्य श्री प्रेम जी महाराज थे। उनका जीवन आदर्श शिष्य के सभी गुणों से ओत–प्रोत था। आदर्श शिष्यत्व की पात्रता के कारण उन्हें गुरूपद प्राप्त हुआ। उनके कथनानुसार "आदर्श शिष्य बने बिना न तो परमात्मा की कृपा के पात्र बन सकोगे और न ही गुरू–कृपा प्राप्त कर सकोगे।" ■

यादें

अध्यात्म-शक्ति के पुंज

संत–पथ की परम्परा के विशिष्ट अनुयायी बुद्धपुरूष, सत्पुरुष, सुघड़ संत पूज्यपाद श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज के अनन्य अंतरंग शिष्य व आध्यात्मिक उत्तराधिकारी पूज्य श्री प्रेम जी महाराज हुए।

आप एक विलक्षण एवं ओजस्वी प्रतिभा से ओत–प्रोत थे। आप साधन–सम्पन्न व आध्यात्मिक–शक्ति के धनी थे। आप गुरूवचनों पर पूर्णरूपेण निष्ठावान थे। आपका मार्गदर्शन पाकर साधक उत्तरोत्तर आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होते रहे। आप अपनी संकल्प–शक्ति की तरंगों के प्रवाह से सत्संग व सत्संगियों का मार्गदर्शन किया करते थे। आपके व्यवहार एवं जीवनशैली से गीता एवं रामायण का ज्ञान चरितार्थ होता था। आप विनम्रशील रहकर सदा तन–मन–धन से सेवा में तत्पर रहे। आपका मुखमण्डल इतना तेजस्वी था कि कोई भी आपसे दृष्टि नहीं मिला पाता था।

आपको होम्योपैथी औषधियों का पूर्ण ज्ञान था, जिससे आप साधकों के अनेक रोगों का निदान किया करते थे, साथ ही साथ आप नाड़ी–ज्ञान में भी दक्ष थे। आप विभिन्न नाड़ियों के पोइन्ट्स (points) पर एक्यूप्रेशर (Accupressure) द्वारा शारीरिक समस्याओं का निवारण किया करते थे।

एक साधक जिन्हें हाइड्रोसिल की समस्या थी, उन्हें डॉक्टर्स ने ऑपरेशन कराने का सुझाव दिया था। उस साधक द्वारा पूज्य श्री प्रेम जी महाराज को अपनी समस्या अवगत कराने पर महाराज श्री ने उन्हें ऑपरेशन न कराने की सलाह दी और अपने पास से होम्योपैथिक औषधि देकर कहा कि इसका सेवन करिएगा, श्रीराम कृपा करेंगे। महाराज श्री द्वारा दी गई औषधि से कुछ काल अनन्तर वह साधक (बिना ऑपरेशन के ही) निरोग हो गये। ये था महाराज श्री की दवा एवं दुआ का प्रभाव!

एक बार ग्वालियर साधना–सत्संग में प्रथम दिवस की रात्रिकालीन (अंतिम) बैठक में एक साधक के विशेष आग्रह पर साधकों का परिचय–कार्यक्रम हुआ, जिसमें सभी साधकों ने क्रम से खड़े होकर अपना–अपना परिचय इस प्रकार दिया–''मेरा नाम यह है और मैं अमुक कार्य करता हूँ।'' अंत में महाराज श्री ने खड़े होकर अपना परिचय इस प्रकार दिया– ''नाम तो परमेश्वर का है, इस शरीर को 'प्रेम' कहते हैं।''

पूज्य महाराज श्री की प्रार्थना में बड़ा बल था। 'वे जो प्रार्थना करते थे वह पूर्ण हो जाती थी। यदि प्रार्थना अनुचित हो तो उन्हें आवाज आ जाती थी कि 'यह नहीं कोई और बात करो।'

साधना–सत्संग ग्वालियर के लिए पूज्य महाराज श्री का आगमन प्रथम बार हुआ। उस समय एक साधक द्वारा पूज्य महाराज श्री को यह अवगत कराया गया कि यहाँ श्रीरामशरणम् में प्रायः सर्प निकला करते हैं। यह सुनकर महाराज श्री ने उन साधक को साथ लेकर आश्रम की सीमा में चहुँ ओर चक्कर लगाया। उनके प्रार्थना–बल से आश्रम में सर्प आज तक दिखाई नहीं दिए।

एक साधक जो कि साधना–सत्संग (ग्वालियर) में सम्मिलित था, वह सत्संग प्रारंभ होने की तिथि के प्रातः श्रीरामशरणम् के पास स्थित छत्री में घूमने गया तो उसको वहाँ पर किसी प्रेतात्मा ने प्रभावित किया, जिससे वह साधक अपना मानसिक संतुलन खो बैठा। पूज्य महाराज श्री को इस घटना की जानकारी देने के उपरांत उस साधक को श्रीरामशरणम् में लाकर एक कमरे में लिटा दिया। महाराज श्री ने कमरे में आकर उस साधक पर दृष्टिपात किया तो वह समझ गये कि उसे क्या हुआ है। महाराजश्री के दृष्टिपात मात्र से ही वह साधक स्वस्थ हो गया। दूसरे दिन प्रातः काल महाराज श्री सैर करने छत्री में गये। हिसार के श्री पंडित जी भी उनके साथ थे। वहाँ एक स्थान पर लगे पौधे को देखकर महाराज श्री ने पंडित जी को कहा कि इस पौधे को उखाड़ो और तोड़कर फेंक दो, श्री पंडित जी ने उनकी आज्ञानुसार वैसा ही किया। उस पौधे को तोड़ते ही एक तड़ाके की आवाज आई और इस प्रकार उस प्रेतात्मा को महाराज श्री ने मुक्ति प्रदान कर दी।

एक बार ग्वालियर पंच–रात्रि साधना–सत्संग में प्रारंभ से ही बारिश होने लग गई थी, जो लगातार चारों दिन होती रही, किन्तु प्रत्येक दिवस दोपहर की खुली

बैठक के दौरान बारिश रूकी रही, जिससे बाहर के साधक खुली बैठकों में अधिक संख्या में बिना किसी व्यवधान के सम्मिलित होते रहे। यह सब महाराज श्री के प्रार्थना–बल का ही प्रताप था।

एक बार एक साधक ने महाराज श्री को अपनी साधनावस्था एवं अभ्यास से अवगत कराया, तब महाराज श्री ने कहा कि ''अब आप जाप की संख्या कम कीजिए और गीता का अध्ययन करिए, साथ ही गीता–ज्ञान से अपने जीवन एवं आचरण का आत्म–निरीक्षण करिए।''

इस प्रकार पूज्य महाराज श्री राम–नाम का आराधन करते हुए सदा सेवा में रत रहे। सभी साधकों के लाभार्थ उनका एक विशिष्ट सारगर्भित उपदेश था– ''परमेश्वर की कृपा का पात्र बनने के लिए निरन्तर अधिक से अधिक आराधन करते रहना चाहिए।''

ऐसे विलक्षण संत थे हमारे महाराज श्री!

उनके चरण–कमलों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शत–शत नमन।

प्रेम व सेवा की मूर्ति परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज जी के अन्तिम दिनों की बात है। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज, दफतर से लौट कर सीधा कमला नगर कोठी पर आ जाया करते थे। रात के समय, वे स्वामी जी के कमरे के बाहर खड़े रहते थे, यह सोच कर कि यदि स्वामी जी महाराज को किसी भी तरह की आवश्यकता होगी तो वे तुरन्त हाज़िर हो सकें और उसे पूरा कर सकें। एक बार माता जी परम पूजनीय श्री महाराज जी के लिए मूड़ा लाईं और बैठने का संकेत किया। महाराज जी ने मना करते हुए हुए कहा कि बैठने से आँख लग जाएगी। वे पूरी पूरी रात स्वामी जी महाराज के कमरे के बाहर खड़े रहते और दिन भर दफतर में काम करते।

राम-नाम श्री राम महाराज, भव-सिंधु में है अतुल जहाज।

1978 में मेरे कॉलेज का ट्रिप दक्षिण भारत जाने वाला था। मेरा बहुत मन था जाने का, सो मैंने सोचा पूज्य श्री प्रेम जी महाराज से आशीर्वाद मिल जाएगा तो माँ भी हाँ कर देंगी। सुबह श्री अमृतवाणी जी के पाठ के बाद मैं भी महाराज जी से मिलने के लिए पंक्ति में खड़ी हो गयी। जब मेरी बारी आई तो महाराज जी ने पूछा,"आप कैसे आए?"

मैंने महाराज जी को ट्रिप के बारे मैं बताया और जाने के लिए आशीर्वाद माँगा। महाराज जी कुछ क्षण के लिए मौन हो गए जैसे अंतर्ध्यान हो गए हों। कुछ क्षणों के बाद उनके श्रीमुख से ये शब्द मेरे कान में सुनाई दिए। "जब बाक़ी लोग नाम लिखवाएँगे तो आप भी अपना नाम लिखवा देना" मेरे मन में एक बार ये सोच तो आई कि महाराज जी ने एक दम हाँ नहीं की। लेकिन कच्ची उम्र में, गुरुजनों के हर भाव को समझने की इस बुद्धि में गम्यता भी नहीं थी। दिसम्बर का महीना था और हम ट्रिप के साथ केरल पहुँचे। वहाँ कोवलम बीच का आनंद ले रहे थे। इतने मे एक मछेरा अपनी किश्ती जिसे कनू कहते हैं, लेकर आया और कहने लगा की वह हमें समुद्र में कुछ दूर तक ले जाकर वापिस ले आएगा। मेरे साथ दो छात्राएँ और थीं सो हम उस छोटी सी नाव में बैठ गए और समुद्र के बीच पहुँच गए। सूर्य अस्त हो रहा था, समुद्र एक दम गहरा और शांत था। इतना सुंदर अलौकिक दृश्य देखकर परमात्मा की याद आई और मैंने अपनी सहेली के साथ मिल के सात बार 'सर्वशक्तिमते परमात्मने श्रीरामाय नमः' का उच्चारण किया। कुछ क्षण बाद हमारी नाव अचानक पानी में उलट गयी! हममें से किसी को भी तैरना नहीं आता था। अचानक समझ में आया कि अगर नाव बह गई तो हम समुद्र में डूब जाएँगे। किसी तरह हम सबने मिलकर उस नाव को पकड़ा और बहुत मुश्किल से उसमें बैठे। इतने मे मछेरे ने पतवार को खोजा और फिर हमें किनारे तक वापिस लाया।

जब श्री महाराज जी को पत्र में सारा हाल सुनाया तो उन्होंने जवाब में लिखा,"प्यारी बहना! मुझे बहुत खुशी है कि परमात्मा ने आपकी जान बचाई है"।

इस हादसे के बाद मुझे समझ में आया कि महाराज जी इस ट्रिप के लिए आशीर्वाद देने के लिए इतनी सोच में क्यों चले गए थे। महाराज तो अंतर्यामी हैं और हमारे जीवन की बागडोर स्वयं सम्भालते हैं। उन्होंने हमारे जीवन की रक्षा के लिए परमात्मा से कितनी प्रार्थना की होगी जिसका हमें ज्ञान भी नहीं।

आज भी हर साँस में गुरुदेव का जितना धन्यवाद दूँ उतना कम है। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने हमें पूज्य श्री प्रेम जी महाराज से मिलाया और हमारे भाग्य जागृत हो गए। हमें अपने सौभाग्य का अंदाज़ा लगाने में कई जन्म लग जाएँगे। ऐसे महान संत जो सिर्फ़ देना ही जानते थे और कभी किसी से कुछ नहीं लेते। अपनी एक कृपा दृष्टि से गुरुदेव हमारा प्रारब्ध मंद कर दिया करते। कितने भक्तों के कर्मभोग भी अपने ऊपर ले लिया करते।

''क्या क्या न दिया आप ने हमको,
क्या क्या न हमने पाया है।
आप दे दे कर कुछ ना बोले,
हमने ले ले कर बिसराया है।''

सेवा भाव और अतिथि धर्म

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज कमला नगर में एक छोटे से कमरे में रहते थे। उनका रात्रि का समय कुर्सी पर ध्यान में बीतता था। जैसे ही उनसे कोई मिलने जाता उसे बिठा कर दौड़ कर तीन मंजिल नीचे जा कर थर्मस फलास्क में कॉफी लेकर आते और पिलाते। गुरु हो कर भी उनका सेवा भाव और अतिथि धर्म निभाना सब को गहरी सीख देता है।

प्रेम मूर्ति गुरूदेव

पूज्य श्री प्रेम जी महाराज का निवास स्थान उन दिनों कमला नगर में हुआ करता था। मेरे पिता जी भी उन दिनों किसी रिश्तेदार के पास काम करने कमला नगर ही जाते थे। जब दीपावली का शुभ अवसर आता तो पिता जी ऑफिस में पूजा करने के लिए जाया करते। एक बार जब दीपावली की रात पिताजी पूजा के लिए जाने लगे तो मैंने उनसे कहा कि मुझे भी साथ ले चलो और मुझे पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के पास जाना है। पिता जी ने मुझे गुरुदेव के निवास स्थान पर छोड़ दिया और स्वयं ऑफिस पूजा करने चले गए।

पूज्य श्री प्रेम जी महाराज मुझे वहाँ अकेले देखकर हैरान हो गए और पूछा आप कैसे आए और किसके साथ आए? मैंने उन्हें सहमे हृदय से बताया कि मैं आज उनके दर्शन करना चाहती थी सो पिताजी मुझे ले आए थे और कुछ समय बाद मुझे वापिस लेने आ जाएँगे।

पूज्य श्री को कुछ लोगों से मिलने के लिए बाहर जाना था। सो उन्होंने मुझे बाहर बरामदे में बैठने के लिए कहा और कहा आप यहीं इंतजार करो। मैं उनके लौटने का इंतजार करती रही। बहुत अबोध बालिका थी अभी मेरी उम्र शायद बीस बरस की भी नहीं थी। श्री प्रेम जी महाराज के प्रेम में इतना खिंचाव था कि उनके दर्शन करने का एक जुनून सा बना रहता था।

महर्षि जब लौट कर घर आए तो उन्होंने मेरे हाथ में बर्फी का टुकड़ा दिया जो मैंने कुछ खा लिया और कुछ हाथ में रख लिया। पिताजी मुझे लेने आए और हम खुशी खुशी घर वापिस आ गए।

उसी शुभ और मंगल दिवस की दीपावली की रात प्रातः ४ बजे पूज्य श्री प्रेम जी ने अपने परम मंगलस्वरूप श्री हनुमान जी के मंगल रूप में दर्शन दिए। पूज्य श्री प्रेम जी महाराज जैसे जैसे मुस्कुराते गए उनका चेहरा पवनपुत्र श्री हनुमान जी के रूप में बदलता चला गया। उनके सिर के ऊपर बहुत ही सुंदर सोने का भारी मुकुट था जो बहुत से हीरे मोतियों से सुसज्जित था। उनके गले में बहुत सी मालाएँ थीं जिनमें बहुत सुंदर सुनहरी रंगीन मणियाँ थीं और उनके कंधे पर बहुत बड़ा गदा चक्र था जो सोने जैसा चमकता था। उनके सारे शरीर में से दिव्य रंग प्रकाशित हो रहे थे। उनका चेहरा मुस्कान से परिपूर्ण था।

ऐसे दिव्य दर्शनों के बीच मेरी आँख खुली और लगा जैसे मन की तृप्ति नहीं हुई। एक बार फिर से उसी रूप की माँग की और आँख बंद कर ली। गुरुदेव जी ने एक बार फिर से इस आत्मा को अपने दिव्य दर्शन देकर निहाल कर दिया। उस दिन से ये जीवन कृतकृत्य हो गया। पूज्य श्री प्रेम जी महाराज हनुमान जी हैं और वे हम सबके कल्याण के लिए इस धरती पर अवतरित हुए। पूज्य श्रीस्वामी जी महाराज ने रामजी से हमारी तार जोड़ी और पूज्य श्री प्रेम जी महाराज जी ने अपने प्रेम से उस तार को पक्का कर दिया।

हमारा कोई भी कर्म इतना अच्छा नहीं हो सकता कि हम गुरुजनों की कृपा के पात्र के योग्य बन सकें।

ये तो उनकी अकारण कृपा है कि इतनी सहज से अपनी कृपा हम सब पर न्यौछावर कर देते हैं और हमारे पापों को नष्ट करके हमारी आत्मा को अपने सत्यस्वरूप में प्यार देते हैं।

पूज्य श्री प्रेम जी महाराज का स्वभाव कितना सरल था कि बिना कुछ कहे हमारे भीतरी भावों को समझ जाते थे। उनका इतना कहना खुश रहो आशीर्वाद के रूप में जीवन की हर परिस्थिति को खुशी में बदल गया। परमेश्वर की अतुलनीय अहैतुकी कृपा हमपर जो हमें इतने पूर्ण गुरु मिले इस जन्म में।

गुरुवर भी होते सुखदाई, बनते जो पिता और माई!

पूज्य श्री प्रेम जी महाराज अपने सभी शिष्यों से अगाध प्रेम करते थे और हर परिस्थिति में उनका साथ दिया करते। अभी मैं हाई स्कूल में थी। क्लास के कुछ बच्चों ने कोई शैतानी कर दी और प्रिन्सिपल साहब ने उन्हें पकड़ लिया। उन्होंने सभी बच्चों को लकड़ी की पतली डंडी से खूब मारा। क्योंकि मैं क्लास की मॉनिटर थी साथ में मुझे भी वही सजा दी। इस बात से मेरे दिल को बहुत चोट लगी और मैं बहुत मायूस हो गयी। दिन भर क्लास में रोती रहती। तीन दिन बीत गए लेकिन मेरा रोना बंद नहीं होता था। घर पर माता पिता भी परेशान हो गए।

मेरी माता जी ने मुझे बिना बताए पूज्य गुरुदेव श्री प्रेम जी महाराज से बात की और मेरे दुःख का हाल सुनाया। अगले दिन अचानक प्रिन्सिपल साहब ने मुझे अपने ऑफिस में बुलाया। जब मैं वहाँ पहुँची तो प्रिन्सिपल साहिब ने बहुत विनम्र होकर मुझसे माफी माँगी और कहा कि वे मेरे पिता जी से मिलना चाहते हैं। पिता जी दूसरे दिन उनसे मिले तो प्रिन्सिपल साहब ने उनसे भी क्षमा माँगी। फिर उन्होंने पिताजी से पूछा कि श्री प्रेमनाथ जी आपके क्या लगते हैं? पिताजी ने उत्तर दिया कि वे हमारे वंदनीय गुरुदेव हैं। मेरी छोटी सी समस्या को सुलझाने के लिए इतने महान गुरुदेव मेरे स्कूल पहुँच कर मेरा साथ देंगे, ऐसा कभी मैंने सोचा न था। मेरा मन खुशी से फूला न समाता था।

उस दिन के बाद प्रिन्सिपल साहिब ने कभी किसी बच्चे की पिटाई नहीं की। पूज्य श्री प्रेम जी महाराज ने मुझे अपने आपको ऊँचा उठने में सहायता दी और मेरा हौंसला बढ़ाया। गुरुदेव हमेशा अपने शिष्यों पर वारे जाते।

गुरुवर भी होते सुखदाई, बनते जो पिता और माई,
शिष्य जनों पर जाते वारे, भेदभाव से रहते न्यारे।।

My Guru's Kripa

My son was one or two years old. He had very severe laryngitis and had been suffering from low grade fever for one year. Alongside he developed tonsillitis. Not surprisingly, the whole family was very worried. The doctor felt that an operation had to be done as that would be the only way he could be cured.

When Pujniya Prem Ji Maharaj heard about this He came to our house. We were all sitting outside in the courtyard. As He entered he said Ram Ram to all of us and then went straight to my little son. Very gently he started to massage his neck. He did this a couple of times.

After two or three days we took him to the doctor again. When the doctor examined him, he discovered that my son had no fever, the chest was clear and all signs of the tonsils had disappeared. The surprised doctor said that no surgery was required. Of course, we all knew that our revered Guru had performed this miracle!

Always Connected to Parmatma-dev

My mother started going to Shree Ram Sharnam in 1962 and would take me with her. I was only five years and Mothers with young children had to sit in the small verandah outside the main hall. Pujyashree Prem Ji Maharaj would stand by the door of the Satsang hall and distribute the Amritvanis to each individual. When all were seated He would take His place on a small cushion inside the Hall beside the Divine Lotus Feet of Pujyashree Swami Ji Maharaj.

As I grew older I was allowed to sit inside the Hall. My mother became an ardent devotee and soon Pujyashree Prem Ji Maharaj Shree asked her if she could help do Sewa by arranging the shoe area in the front. Mataji was delighted and would rush to Shree Ramsharnam to do her duties with abundant joy. Premji Maharaj would often come by the house every other day on His Vespa Scooter and take Mataji with Him to do social visits regarding Sewa towards the needy families. Sometimes they would walk to meet other devotee families. Sometimes to my delight Pujyashree would take me to a social visit if mother was not at home.

Pujyashree always looked very young and dressed in shirts with vibrant colours as a contrast to His serious nature. His smile always reached His wonderful Big eyes.

If there was Ramayanji path in someone's house Maharaj Ji always made sure He participated even if for a short while.

Maharaj Shree seldom gave any pravachans. And once it was somehow decided that on a particular Sunday Gurudev will be giving Pravachans. After Amritvani was sung, the sangat kept waiting but Prem Ji Maharajji stayed silent. According to Mataji when a close sadhak asked Pujyashree as to why He did not give pravachans on that particular day, he quietly replied बहना! ऊपर से कोई शब्द आया ही नहीं। We all then understood how Maharajshree was continually connected to Sarvashaktiman Parmatmadev himself and would speak only at the Will of Parmeshwar.

When my mother wanted to do Sewa she was given the opportunity. Pujyashree Prem Ji Maharaj Shree. made every sadhak feel so special with His love and guidance and quiet affection.

Pujniya Maharaj Ji's Unconditional Love

I did not think I was lucky, as many others might have thought, because I knew Pujniya Premji Maharaj closely, but I took him for granted (till much later), as someone who would be always there. And He is always with us. He was brother to some, saviour to some, Guru to all.

He is part of my earliest memories. First, as one who gave me a ride on his cycle, later as one who would just turn up any time with his little bag of homeopathic medicines. All us kids would crowd around when He came and ask for "meethi homeopathic goli" and each was asked to open her mouth and given a few and then He would be off. And that remained for many years. This magic of appearing and then whizzing of on his Bajaj scooter. He had a selfless life, linked with sewa and renunciation. All love and life for him was spiritual.

I lost my father when I was twelve years old. My parents were displaced by partition and we were displaced yet again when I lost my father. My mother was homeless, unemployed, widowed with small children to take care of, but with one big asset: A special and beloved Guru, who would be there for us, even while all the family struggled to make their own lives.

It was then that I started to know and watch Pujniya Maharaj Ji. Shree Ram Sharnam had been built on 8 Ring Road. We know it was built because of His charisma, but He never took any credit for it. He always asked us to come, but given our habit of getting up late, or because of school or college, we went rarely.

We took a house in Lajpat Nagar, to be close to Shree Ram Sharnam. My mother stared to teach and would return home late in the afternoon. She had never worked till the passing away of my father and was naturally tired, nervous, and full of anxiety for the next day. Often forgetful, she could not find her keys, or where she left her cheque book and had no money for basics. Always, on the worst of such days, Pujniya Maharaj Ji would suddenly appear in the late afternoon! And her problems would be sorted.

He would come hurriedly, bless us with Ram Ram and leave on his scooter, rushing off to see other sadhaks. Even on the coldest day of Delhi winter, rain or shine, He would come. If he didn't come for two days or more, we would all miss him and sure enough he would turn up after a day or two.

Even as we were busy with school and everything school kids did, we would hear of stories and people's experiences about Maharaj Ji. These stories were mostly conversations about the great struggles of Punjabi families, especially women who had to rebuild their lives after the traumatic experiences of partition, displacement, encampment, impoverishment, social demands, violence and more. Pujniya Maharaj Ji was the balm in these stories. All who knew Him would say how at their moment of sorrow, grief, hopelessness, He would just by chance turn up and say the simplest of words like 'have courage' 'have patience' 'God will be with you', 'you are blessed' and 'come to Shree Ram Sharnam' And they would come, in flocks for the morning prayer and the day would go by in struggle, in challenge, and yet things worked out for them, as He touched the lives of all whom He met. That is how their faith in Him increased and became unforgettable.

The disciples developed a bond between themselves which was deep and intersecting. They supported each other in many ways. Another sadhak we knew had like us, lost her father. She, her brother and mother had really no where to go in the early 1960's, when they came to Delhi. They rented a room. Life changed for them totally after they met Pujniya Maharaj Ji at a satsang in a relative's house. Pujniya Maharaj Ji would just turn up at their place unannounced. He urged them to take a loan to buy a house, requested them to enter higher education, even brought university admission forms for them and encouraged them build their careers. As they grew, they never had to look back at the poverty of their old days because of Him. One could go on with the trove of such stories.

Everyone who knew Him spoke of His almost magical touch. For example, once my mother had to organize a school trip with thirty young kids. They all reached the station. However, she had lost all the tickets. She felt desperate and hopeless. Suddenly she saw Pujniya Maharaj Ji in that crowded station, holding the tickets. How did He came there? Where did He find the tickets? No one knows! But that was Him, in our everyday lives. There were dozens of such incidents of own deprivations and errors when we were saved by His Grace.

In our own lives, I saw that Pujniya Maharaj Ji's religion was his practice. This practice was based on love. Love that was purely spiritual. It was not love for one or for some, but unconditional love, evident not in word or emotion but in deed, in everyday practice. Love as Hope, as encouragement, without judgement, which was constant, even, centred, without beginning or end. Without measurement or for any return. Pujniya Swami Ji's teachings and the religious texts He read were seen in His every day practice and the experiences of ordinary people He came across, with their everyday troubles. His conclusions were always of hope, of kindness, forgiveness, empathy, solidarity. Trust in the Almighty, others and yourself was a tenet. There was never any anger or disrespect of the other, person or community. That was not religion for him. He also brought Pujniya Maharaj Ji (Vishwamitter Ji Maharaj) when he was doing his post-doctoral studies at the AIIMS into our lives. The rest is history.

For Pujniya Prem Ji Maharaj, religion was not ritual it was faith. It was trust. It was looking inwards and relating the inward with outer challenges. With humanity and peace.

Now, long after He is has left his physical body, I think of Him everyday. He appears before me at every moment of trial or tribulation. Just a year back when I was on the table before cancer surgery or radiation thereafter, I saw Him every time. He told me to take deep breaths with my eyes closed, concentrate at the centre of my forehead. I feel an inner peace because of him. His memory is my private moment.

I think his favourite word was 'Kripa'. I cannot express the complete English version, Because it was a mixture of many ideas. One of mercy, forgiveness, ("forgive them God for they know not what they do") second of asking for spiritual help, third of petitioning and asking with humility. Often at the end of his short sermon, he would often repeat as if in humble prayer on behalf of all to his spiritual master: "Kripa-kar, Kripa-kar, Kripa -kar". He is still here for his disciples, fulfilling the role He always played in our lives.

Children's Tributes to Param Pujniya Prem Ji Maharaj

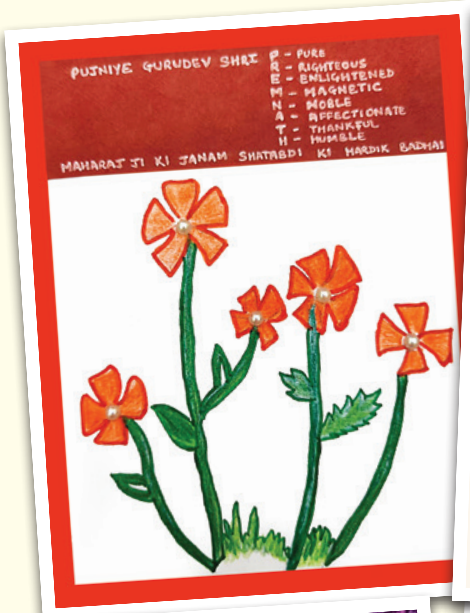

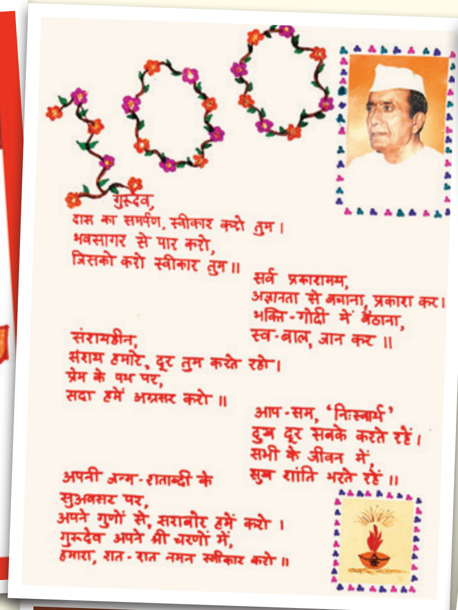

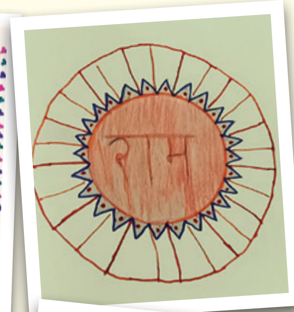

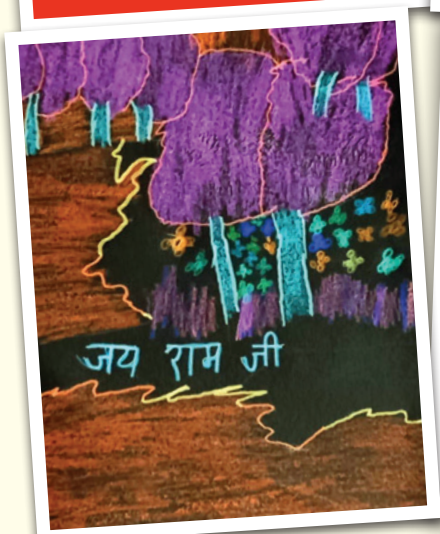

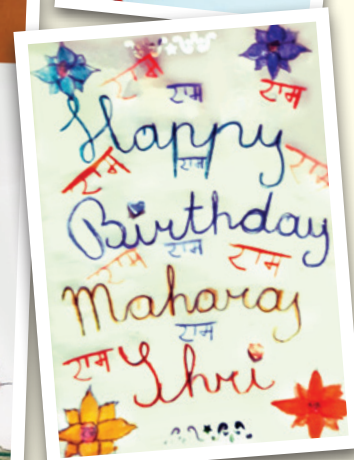

(The colourings submitted by children will be published in the January issue.)

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924